भूमिका

भाषा शिक्षण अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान की शाखा है। भाषा शिक्षण ने आज भाषा के शिक्षण के लिए वैज्ञानिक पद्धतियों को अपनाया है और इसके लिए उसने भाषाविज्ञान का सहारा लिया है। भाषा शिक्षण में भाषाविज्ञान के अनुप्रयोग से भाषा के कौशलों को विकसित करना आसान हो गया है। भाषा शिक्षण के चारों कौशलों का विकास भाषा शिक्षण का मुख्य उद्देश्य है, छात्र में अन्य भाषा के प्रयोग की कुशलता का विकास इस प्रकार करना कि वह मातृभाषाभाषी के समान अन्य भाषा का प्रयोग कर सकें।

भाषा शिक्षण में चार मुख्य कौशल है- श्रवण, भाषण, पठन और लेखन। श्रवण कौशल का मुख्य उद्देश्य छात्र में ध्वनियों को सुनकर समझने की कुशलता का विकास करना है तो दूसरी और शब्द, वाक्यांशों एवं वाक्यों को भी सुनना एवं समझना श्रवण कौशल का ही उद्देश्य है। भाषा शिक्षण का दूसरा महत्वपूर्ण भाषाई कौशल है - भाषण कौशल और इसका मुख्य उद्देश्य छात्र में इस प्रकार योग्यता उत्पन्न करना कि वह अपने भावों तथा विचारों को स्पष्ट ढंग से अभिव्यक्त कर सके। आगे पठन कौशल भाषा शिक्षण का तीसरा महत्वपूर्ण कौशल है जिसमें छात्र अन्य भाषा की वर्णमाला के लिपि प्रतीकों को पहचानकर उनसे अर्थ ग्रहण करता है। भाषाई कौशल में सबसे अंत में आता है लिखित अभिव्यक्ति संबंधी कौशल याने लेखन कौशल। लेखन कौशल का मुख्य उद्देश्य है लिपि प्रतीकों के माध्यम से विचारों तथा भावों को लेखन की सहायता से प्रकट करना।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का विषय है 'वर्धा जिला परिषद स्कूलों की सातवीं कक्षा में हिंदी भाषा अधिगम और त्रुटि विश्लेषण' इसके अंतर्गत वर्धा शहर के तीन स्कूल चुने गए जो वर्धा जिला परिषद के अंतर्गत आते हैं। इन स्कूलों की सातवीं कक्षा के छात्रों को त्रुटि विश्लेषण के लिए चुना गया। इन छात्रों के भाषण, पठन एवं लेखन इन तीन भाषाई कौशलों की त्रुटियों का अध्ययन किया गया है। तथ्य संकलन हेतु प्रश्न बनाएं गए और प्रत्येक प्रश्न को छात्रों द्वारा सुलझाया गया, इससे प्राप्त तथ्य सामग्री को विश्लेषित किया गया है। भाषण, पठन और लेखन कौशल के लिए अलग अलग प्रश्न बनाए गए थे।

इस लघु शोध प्रबंध का मुख्य उद्देश्य यह था कि वर्धा जिला परिषद स्कूलों में पढ़ रहे मराठी मातृभाषी छात्रों द्वारा भाषा अधिगम में होने वाली त्रुटियों को संकलित करना, उन त्रुटियों को वर्गीकृत करना उनके के कारण बताना तथा निदान और उपचार हेतु आवश्यक सुझाव प्रस्तावित करना ।

प्रस्तुत लघु शोध भाषा शिक्षण के महत्वपूर्ण अंग भाषा अधिगम पर निर्भर है भाषा अधिगम को सरल शब्दों में यह कह सकते हैं कि 'यह भाषा को सीखने की प्रक्रिया है।' अधिगम प्रक्रिया में छात्र को कई जगहों पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यह कठिनाइयाँ आगे चलकर छात्र के भाषाई व्यवहार में त्रुटियों का कारण बनती है। इन त्रुटियों के अध्ययन हेतु भाषा शिक्षण में एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है त्रुटि विश्लेषण जिसके अंतर्गत भाषाई व्यवहार में होने वाली त्रुटियों को पहचानकर उन्हें वर्गीकृत किया जाता है और उनके कारणों पर चर्चा करते हुए उनके निदानात्मक उपाय बताए जाते हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए राम कमल पाण्डेय द्वारा लिखित पुस्तक 'त्रुटि विश्लेषण सिद्धांत और व्यवहार' (तिब्बती छात्रों के हिंदी अधिगम के संदर्भ में) बहुत महत्वपूर्ण साबित हुई है। प्रस्तुत शोध कार्य हेतु इसी पुस्तक को आधार बनाया गया है। इस पुस्तक ने प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए प्रेरणास्रोत का कार्य किया है।

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु सातवीं कक्षा को इसलिए चुना गया है क्योंकि इस कक्षा के छात्र पाँचवीं कक्षा से हिंदी भाषा को सीख रहे हैं और हिंदी की व्याकरणिक व्यवस्था से भी सतही स्तर पर परिचित हैं।

सामग्री संकलन हेतु सातवीं कक्षा की पुस्तक 'हिंदी सुलभ भारती' के आधार पर ही प्रश्नावली का निर्माण किया गया। इस पुस्तक में छात्रों को संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, लिंग, वचन, काल, विराम चिह्नों का प्रयोग, मुहावरों का वाक्य में प्रयोग, शब्दार्थ आदि से परिचित करवाया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध कार्य अपने आप में एक कठिन कार्य है क्योंकि त्रुटियों को पहचानना और उनको वर्गीकृत करना एक जटिल प्रक्रिया है। काफी त्रुटियाँ ऐसी हैं जो केवल मराठी के प्रभाव से नहीं बल्कि अन्य कारणों से भी घटित होती हैं।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का मुख्य उद्देश्य यह है कि हिंदी भाषा अधिगम में मराठी भाषी छात्रों द्वारा घटित त्रुटियों के कारण जानकर उनके निदान हेतु उपाय बताना इसी के साथ छात्रों की शब्द संपदा, व्याकरणिक ज्ञान को भाषण, पठन एवं लेखन कौशल के स्तर पर जाँचना। यह लघु शोध प्रबंध सातवीं कक्षा के छात्रों की त्रुटियों का विवरण प्रस्तुत करता है।

इस शोध कार्य की सबसे बड़ी उपयोगिता यह है कि छात्रों की त्रुटियों की जानकारी शिक्षक को हो तो शिक्षक उन त्रुटिपूर्ण स्थानों पर छात्रों को मार्गदर्शन करेंगे और छात्रों द्वारा घटित त्रुटियों को कम करने का प्रयास करेंगे। इस प्रकार त्रुटि विश्लेषण पर किया गया यह कार्य

शिक्षकों की काफी सहायता कर सकता है। त्रुटि विश्लेषण की मदद से त्रुटियों का अध्ययन करके अध्यापन हेतु उपयुक्त ऐसी सामग्री का निर्माण किया जा सकता है जो त्रुटियों को कम कर सके। यह सामग्री उन छात्रों के लिए भी उपयोगी होगी जो स्वयं बिना किसी अध्यापक के हिंदी सीख रहे हैंया सीखना चाहते है।

प्रस्तुत शोध कार्य में कुछ पुस्तकें बहुत उपयोगी साबित हुई जैसे- 1. भाषा शिक्षण सिद्धांत और प्रविधि, लेखक मनोरमा गुप्त, 2. वर्धा हिंदी शब्द कोश, 3. भाषा शिक्षण, लेखक रवींद्रनाथ श्रीवास्तव आदि।

शोध कार्य को निम्नलिखित चार अध्यायों में विभाजित किया गया है-

पहला अध्याय - भाषा अधिगम और त्रुटि विश्लेषण

इस अध्याय में भाषा अधिगम प्रक्रिया को विस्तारित रूप से समझाया गया है जिसमें भाषा अधिगम की परिभाषा, उसका अर्थ और प्रक्रिया को विवेचित किया गया है। भाषा अधिगम प्रक्रिया के अंतर्गत अन्य भाषा अधिगम की प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए उसको प्रभावित करने वाले घटकों की चर्चा भी की गई है। इसी के साथ भाषा अधिगम और भाषा शिक्षण का परस्पर संबंध भी दर्शाया गया है। भाषा अधिगम और भाषा शिक्षण दोनों परस्पर संबंधित प्रक्रियाएं हैं यह बताया गया है।

इसी प्रकार इस अध्याय में त्रुटि विश्लेषण सिद्धांत पर भी चर्चा की गई है, इसके अंतर्गत त्रुटि विश्लेषण की परिभाषा देते हुए अंतरभाषा की संकल्पना उसकी प्रकृति, जिसके अंतर्गत त्रुटियों का और अंतरभाषा का संबंध बताते हुए त्रुटियों के घटित होने में अंतरभाषा की क्या भूमिका है उसे समझाया गया है। त्रुटियों को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है। भूल, चूक और त्रुटियाँ। इन तीन वर्गों में त्रुटियों को विभाजित करते हुए उनको उदाहरण द्वारा समझाया गया है। इसके उपरांत त्रुटियों के कारणों पर चर्चा की गई है।

दूसरा अध्याय- मराठी हिंदी व्यतिरेकी विश्लेषण

प्रस्तुत अध्याय को तीन भागों में विभाजित किया गया है जैसे- उच्चारण स्तर पर व्यतिरेक, वर्तनी स्तर पर व्यतिरेक, व्याकरणिक स्तर पर व्यतिरेक। उच्चारण स्तर पर व्यतिरेक के अंतर्गत मराठी और हिंदी में किस तरह उच्चारण स्तर पर व्यतिरेक घटित होता है इसका विवेचन उदाहरणों द्वारा किया गया है। जिसमें 'ऋ' और 'ज्ञ' वर्णों से संबंधित उच्चारण व्यतिरेक पर प्रकाश डाला गया है। वर्तनी स्तर पर व्यतिरेक को दर्शाने के लिए उदाहरणों का सहारा लिया गया जिसमें समान वर्तनी और भिन्न अर्थ वाले शब्द, समान अर्थ और भिन्न वर्तनी वाले शब्द और 'ळ' ध्वनि के व्यतिरेक वाले समान अर्थ वाले शब्दों की सूची दी गई है।

व्याकरणिक स्तर पर व्यतिरेक को दर्शाने के लिए संग्रहित तथ्य सामग्री से कुछ उदाहरण लिए गए हैं। इसके अंतर्गत लिंग, वचन, पुरुष, काल, पक्ष वृत्ति एवं क्रिया स्तर पर जो व्यतिरेक है उसे समझाया गया है।

तीसरा अध्याय – भाषण एवं पठन स्तर पर घटित त्रुटियों का विश्लेषण

इस अध्याय में भाषण कौशल और पठन कौशल की परिभाषा एवं उनका अर्थ समझाते हुए उनके महत्वपूर्ण अंगों पर विचार किया गया है। भाषण और पठन कौशल के स्तर पर घटित त्रुटियों को अलग अलग रूप में विभाजित किया गया है। जैसे भाषण स्तर पर घटित त्रुटियों का विश्लेषण और पठन स्तर पर घटित त्रुटियों का विश्लेषण।

भाषण स्तर पर घटित त्रुटियों के विश्लेषण के अंतर्गत त्रुटियों को एकत्रित करने हेतु प्रयुक्त तथ्य सामग्री की प्रश्नावली का स्वरूप और उसके उद्देश्य की चर्चा की गई है। भाषण स्तर पर घटित होने वाली त्रुटियों के लिए छात्रों को एक चित्र का वर्णन करने के लिए कहा गया था और विज्ञान और मनुष्य इस विषय पर बोलने के लिए कहा गया था। इनसे प्राप्त तथ्यात्मक सामग्री को विश्लेषित किया गया है और उन त्रुटियों के कारणों पर चर्चा की गई है। पठन स्तर पर होने वाली त्रुटियों को एकत्रित करने हेतु जो सामग्री प्रयुक्त की गई है वह एक प्रश्नावली है जैसे- कविता पढ़ो, गद्य वाचन करो और कुछ ऐसे शब्द छात्रों को पढ़ने के लिए कहा गया था जो मराठी हिंदी में समान हैं परंतु उच्चारण भिन्नता के कारण उनके प्रयोग में छात्रों द्वारा त्रुटियाँ होती हैं ऐसी त्रुटियों को इस अध्याय में पठन स्तर के अंतर्गत होने वाली त्रुटियों में वर्गीकृत किया गया है और उनके कारण और निदानात्मक उपाय बताए हैं।

चौथा अध्याय- लेखन स्तर पर घटित त्रुटियाँ एवं उनका विश्लेषण

इस अध्याय के अंतर्गत तथ्य संकलन हेतु दी गई प्रश्नावली से प्राप्त त्रुटियों को वर्गीकृत किया गया है। अनुवाद संबंधी प्रश्नावली से प्राप्त त्रुटियों को चूक, भूल और त्रुटियों में विभाजित किया गया है। इसमें भूलों को चयन संबंध भूलें, समावेश संबंधी भूलें और लोप संबंधी भूलों में विभाजित किया गया है। त्रुटियों को वर्तनीगत त्रुटियाँ और व्याकरणिक त्रुटियों में विभाजित किया गया है। व्याकरणिक त्रुटियों को काल, पक्ष, वृत्ति संबंधी तथा अन्य व्याकरणिक कोटियों के प्रयोग संबंधी एवं शब्द भेद के प्रयोग संबंधी कोटियों में विभाजित किया गया है।

निबंधात्मक प्रश्नावली से प्राप्त तथ्यात्मक सामग्री की त्रुटियों को चूक, भूल और त्रुटियों में विभाजित किया गया है। इसमें व्याकरणिक त्रुटियों के अंतर्गत व्याकरणिक कोटियों के प्रयोग संबंधी त्रुटियाँ और वाक्य संरचना से संबंधित त्रुटियों में विभाजित किया गया है। इस तरह प्राप्त त्रुटियों को

वर्गीकृत किया गया है और उन त्रुटियों के कारण बताते हुए उसके निदानात्मक उपायों पर चर्चा की गई है। लेखन कौशल में वर्तनीगत त्रुटियाँ एवं मातृभाषा के व्याघात का परीक्षण करने हेतु छात्रों को कुछ ऐसे शब्द दिए गए थे जो मराठी और हिंदी में समान हैं किन्तु उसमे वर्तनी की भिन्नता है। ऐसे आठ शब्द 35 छात्रों द्वारा लिखवाए गए हैं। इन सभी छात्रों द्वारा लिखे गए शब्दों को एक तालिका की सहायता से दर्शाया गया है। इनके लेखन में प्राप्त त्रुटियों के कारण बताए गए हैं और इन शब्द स्तर की त्रुटियों को रोकने अथवा कम करने हेतु कुछ सुझाव प्रस्तावित किए गए हैं। इस प्रकार लघु शोध-प्रबंध को चार अध्यायों में विभाजित किया गया है।

अंत में उपसंहार है जिसमें शोध कार्य के संकलित सामग्री से प्राप्त निष्कर्षो को दिया गया है और उपसंहार के पश्च्यात संदर्भ ग्रंथ-सूची एवं परिशिष्ट को भी दिया गया है।

अपनी क्षमता एवं योग्यता के अनुसार मैंने इस लघु शोध प्रबंध को पूर्ण किया है। यह शोध भाषा शिक्षण में कार्य कर रहे छात्रों के लिए उपयुक्त हो एवं यह शोध कार्य सभी की आकांक्षाओं पर खरा उतरे इसी आशा के साथ यह लघु शोध-प्रबंध आपके सामने प्रस्तुत है।